

## वैश्विक जल संसाधन रिपोर्ट 2021: WMO

### प्रलिस के लिए:

जलवायु परिवर्तन, जल संकट, ला नीना, सूखा, बाढ़, क्रायोस्फीयर, इंडो-गेंजेटिक मैदान।

### मेन्स के लिए:

वशिव मौसम वजिज्ञान संगठन (WMO), वैश्विक जल संसाधन रिपोर्ट 2021.

### चर्चा में क्यों?

हाल ही में WMO (वशिव मौसम वजिज्ञान संगठन) ने अपनी पहली वार्षिक स्टेट ऑफ ग्लोबल वाटर रसिर्सज रिपोर्ट 2021 जारी की है।

### रिपोर्ट:

- इस वार्षिक रिपोर्ट का उद्देश्य बढ़ती मांग और सीमति आपूर्ति के युग में वैश्विक ताजे जल के संसाधनों की नगिरानी और प्रबंधन का समर्थन करना है।
- रिपोर्ट तीन प्रमुख क्षेत्रों पर केंद्रति है:
  - धारा प्रवाह, कसिी भी समय नदी धारा के माध्यम से बहने वाले जल की मात्रा।
  - स्थलीय जल भंडारण (TWS) - भूमिकी सतह पर और उप-सतह में के सभी जल की मात्रा।
  - हमिमंडल

### रिपोर्ट के नषिकर्ष:

- परचिय:
  - 2001 और 2018 के बीच, UN-WATER ने बताया कसिभी प्राकृतिक आपदाओं का 74% जल से संबंधति था।
  - मसिर में हाल ही में संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन, COP27 ने सरकारों से अनुकूलन प्रयासों में जल को एकीकृत करने का आग्रह कया, पहली बार COP में जल के महत्त्व के परणामों को दस्तावेजों में संदर्भति कया गया है।
  - 6 अरब लोगों को प्रतविरष कम से कम एक महीने जल तक अपर्याप्त पहुँच है और वर्ष 2050 तक यह बढ़कर पाँच अरब से अधिक होने की उम्मीद है।
  - वर्ष 2021 में वशिव के बड़े क्षेत्रों में सामान्य से अधिक शुष्क स्थति दर्ज की गई, जो एक ऐसा वर्ष था जसिमें जलवायु परिवर्तन और ला नीना घटना से वर्षा के प्रतरूप प्रभावति हुए थे।
  - 30 साल के हाइड्रोलॉजिकल औसत की तुलना में औसत प्रवाह से कम वाला क्षेत्र औसत प्रवाह से अधिक वाले क्षेत्र की तुलना में लगभग दो गुना बड़ा था।
- क्षेत्रवार धारा प्रवाह:
  - सूखा: असामान्य रूप से शुष्क क्षेत्रों में दक्षणि अमेरिका का रयिो डी ला प्लाटा क्षेत्र शामिल है, जहाँ वर्ष 2019 से लगातार सुखे ने इस क्षेत्र को प्रभावति कया है।
  - सामान्य से नीचे: अफ्रीका में नाइज़र, वोल्टा, नील और कांगो जैसी प्रमुख नदियों में वर्ष 2021 में औसत से कम जल प्रवाह था। यही प्रवृत्तरूस, पश्चमि साइबेरया और मध्य एशया के कुछ हसिसों में नदियों में देखी गई थी।
  - सामान्य से ऊपर: दूसरी ओर कुछ उत्तरी अमेरिकी बेसनों, उत्तरी अमेज़ॉन और दक्षणि अफ्रीका के साथ-साथ चीन के अमूर नदी बेसनि एवं उत्तरी भारत में नदी जल की मात्रा सामान्य से अधिक थी।
- स्थलीय आवरण:
  - सामान्य से नीचे: नदी के प्रवाह में बदलाव के अलावा, समग्र स्थलीय जल भंडारण को संयुक्त राज्य अमेरिका के पश्चमि तट पर, दक्षणि- मध्य अमेरिका और पेटागोनया, उत्तरी अफ्रीका एवं मेडागास्कर, मध्य एशया तथा मध्य पूर्व, पाकसितान और उत्तर भारत में सामान्य से नीचे के रूप में वर्गीकृत कया गया था।

- सामान्य से ऊपर: यह मध्य अफ्रीका, उत्तरी दक्षिण अमेरिका विशेष रूप से अमेज़न बेसिन एवं उत्तरी चीन में सामान्य से ऊपर था।
- **हिममंडल:**
  - पहाड़ों को अक्सर प्राकृतिक "वाटर टावर" कहा जाता है क्योंकि वे अनुमानित रूप से 9 बिलियन लोगों के लिये नदियों और मीठे जल की आपूर्ति का स्रोत हैं।
  - **हिममंडल जल संसाधनों में परिवर्तन** खाद्य सुरक्षा, मानव स्वास्थ्य, पारिस्थितिकी तंत्र की अखंडता और रखरखाव को प्रभावित करते हैं तथा आर्थिक एवं सामाजिक विकास पर गहरा प्रभाव डालते हैं।

## भारतीय परिदृश्य:

- पूर्वी पाकस्तान, उत्तरी भारत, दक्षिणी नेपाल और पूरे बांग्लादेश में फैले **सिंधु-गंगा के मैदान (Indo-Gangetic Plain- IGP)** पर ग्लोबल वार्मिंग के कुप्रभाव देखे जा सकते हैं।
- वर्ष 2021 में कुल जल भंडारण में गिरावट आने के बावजूद गंगा-ब्रह्मपुत्र और सिंधु घाटियों में **हिमनदों के पिघलने के कारण इनकी नदी धाराओं में अधिक जल का प्रवाह दर्ज किया गया।**
- यह बेहद चिंताजनक खबर है क्योंकि IGP चार देशों के लगभग आधे अरब लोगों के जीवन यापन हेतु सहायक है।

## सुझाव:

- मीठे जल के संसाधनों के वितरण, मात्रा और गुणवत्ता में हुए परिवर्तन संबंधी समझ पर्याप्त नहीं है, इस अंतर को समाप्त करने और दुनिया के **वभिन्न हिस्सों में जल की उपलब्धता का संक्षिप्त वितरण प्रदान करने की आवश्यकता है।**
- सूखे और बाढ़ की पूर्व चेतावनी प्रणाली के लिये **एंड-टू-एंड विकास की आवश्यकता है।**
- ग्लेशियर के पिघलने और उच्च जल उपलब्धता के समय का दीर्घकालिक अनुमान अनुकूलन परिणामों के लिये महत्वपूर्ण इनपुट होना चाहिये।
- जल विज्ञान डेटा की उपलब्धता और साझाकरण में तेज़ी लाने की आवश्यकता है, जिसमें नदी के नरिहण और सीमा पार नदी बेसिन की जानकारी शामिल है।

## वर्ल्ड मौसम विज्ञान संगठन (WMO):

- **वर्ल्ड मौसम विज्ञान संगठन (WMO)** 192 देशों की सदस्यता वाला एक अंतर-सरकारी संगठन है।
  - भारत **वर्ल्ड मौसम विज्ञान संगठन** का सदस्य देश है।
- इसकी उत्पत्ति **अंतरराष्ट्रीय मौसम विज्ञान संगठन (IMO)** से हुई है, जिसे वर्ष 1873 के **वियना अंतरराष्ट्रीय मौसम विज्ञान कॉन्ग्रेस** के बाद स्थापित किया गया था।
- 23 मार्च, 1950 को WMO कन्वेंशन के अनुसमर्थन द्वारा स्थापित **WMO, मौसम विज्ञान (मौसम और जलवायु), जल विज्ञान तथा इससे संबंधित भू-भौतिकीय विज्ञान** हेतु संयुक्त राष्ट्र की विशेष एजेंसी बन गई है।
- WMO का मुख्यालय **जनिवा, स्विट्ज़रलैंड** में है।

## स्रोत: डाउन टू अर्थ